Bihar Board Class 6 Social Science Geography Notes Chapter 10 बिहार दर्शन-2

पाठ का सारांश

बिहार दर्शन-2 में बच्चों ने मिलकर रविवार के दिन सासाराम स्थित शेरशाह का मकबरा, पटना के गोलघर, संग्रहालय तथा पटना सिटी स्थित तख्त मंदिर साहेब घूमने गये।

अगले दिन सभी बच्चे सासाराम राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-2 के किनारे रोहतास का जिला मुख्यालय है और यहाँ से दिल्ली-हावड़ा जोड़ने वाली ग्रैंडकोर्ड रेलवे लाइन भी गुजरती है। इस प्रकार, सभी बच्चे तैयार हो गये बस के द्वारा दर्शनीय स्थलों को देखने।

प्रधानाचार्य ने बाल सभा में बच्चों को बताया कि रोहतास जिला मुख्यालय सासाराम में अफगान शासक शेरशाह का मकबरा स्थित है।

शेरशाह ने हुमायूँ को हराकर भारत की गद्दी पर कब्जा कर लिया था । यह मकबरा शेरशाह ने अपने जीवनकाल में ही बनवाना प्रारंभ करा दिया था। यह मकबरा अष्टकोणीय है जो लाल पत्थरों से बना हुआ है। मकबरे की छत गोल गुम्बद के रूप में है। यह मकबरा एक तालाब के बीचों-बीच हे और वहाँ तक जाने के लिए बीचों-बीच एक पुलिया मुख्य द्वार से मकबरा तक बनी हुई है।

यह मकबरा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के संरक्षण में है और
इसके कर्मचारी इसकी देख-रेख करते हैं। फिर सभी लोग पटना के
गोलघर देखने के लिए गये। यह जगह पटना के गाँधी मैदान के पश्चिम
में स्थित है। गोलघर की गोल दीवारों पर एक सूचना पट्ट लगी है जिसमें गोलघर के सम्बन्ध में कई जानकारियाँ दी गई हैं। उसमें लिखा है कि इसका निर्माण कैप्टन जान गॉलस्टीन ने 1776 ई. में अनाज को सुरक्षित भंडारण के उद्देश्य से करवाया था ताकि दुर्भिक्ष या अकाल के समय इस अनाज से मदद पहुँचाई जा सके ।

इसकी दीवारें 12 फीट मोटी और 96 फीट ऊँची है। इसके शीर्ष पर चढ़ने के लिए दोनों ओर से सीढियाँ बनी हुई हैं। सीढियाँ को चढ़कर ही गोलकर ऊपर जाया जाता है। वहाँ से पूरा पटना दिखाई देता है उत्तर दिशा में गंगा नदी बिल्कुल पास से बहती है । दूर पूरब में महात्मा गाँधी सेतु दिखाई पड़ता है।

गाँधी मैदान का विहंगम खुला क्षेत्र और एक किनारे पर स्थित श्री कृष्ण मेमोरियल हॉल तथा चारों ओर ऊँची इमारतें बहुत ही आकर्षक लगती हैं। गोलघर के निकट में ही पटना संग्रहालय स्थित है। यहाँ स्कूली बच्चों को रियायती दुर पर प्रवेश टिकट मिलता है। टिकट लेने के बाद हमलोग अंदर गए। चारों और बड़ा-सा बगीचा है और बीच में संग्रहालय का भवन है। यह भवन राजस्थानी शैली में बना है। संग्रहालय का भवन के बगीचे में सामने ही तोच रखे हैं। ये तोपे अंग्रेजी शासन की हैं। चारों ओर कई बड़ी-बड़ी दुर्लभ मूर्तियाँ भी देखने को मिलती हैं।

भवन में मुख्य द्वार से जाते ही एक विशाल पेड़ है जो लगभग 5000 वर्ष पुराना है और उसकी लकड़ियाँ अब पत्थरनुमा हो गई हैं।

https://www.evidyarthi.in/

यह पत्थरनुमा वृक्ष जीवाश्म का उदाहरण है। संग्रहालय में भगवान बुद्ध और जैन तथा मौर्यकाल की महत्वपूर्ण मूर्तियों, सिक्कों और बर्तनों की कतार हैं। सभी वस्तुओं के पास नाम सहित उनकी आयु, उपयोगिता लिखी हुई है, जिसे पढ़कर उसके बारे में समझा जा सकता है। वहाँ एक राजेन्द्र कक्ष बना हुआ।

यहाँ राष्ट्रपति के रूप में राजेन्द्र प्रसाद को मिले उपहारों एवं वस्तुओं को स्मृति के रूप में रखा गया है। हाँ, हमें संग्रहालय में रखे गए चीजों को बर्बाद नहीं करना चाहिए संग्रहालय में हर जगह सूचनाएँ लिखी हुई हैं। हर कमरे में दीवार पर कैमरे लगे हुए हैं। अगर कोई छुएगा तो कैमरे में उसकी तस्वीर आ जाएगी।

यहाँ पत्थर की एक सुंदर-सी मूर्ति थी जिस पर 'दक्षिणी' लिखा हुआ था।
वह मूर्ति दीदारगंज में मिली थी। वह मूर्ति बहुत ही चमक रही थी और
उसके गले में एक हार भी था। इमलोगों ने घूमकर सारा संहालय देखा।

संग्रहालय देखने से इतिहास की समझ बनती है। इस प्रकार हमलोगों ने बिहार के दार्शनिक स्थलों को देखा और बहुत-सी ज्ञानवर्द्धक रोचक बातें जानने को मिली । हमने गोलघर, पटना संग्रहालय, तख्त हरमंदिर साहेब के दर्शन भी किये।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/